International Indexed & Refereed Research Journal, ISSN 0975-3486,(Print)E-ISSN-2320-5482, April- May (Combind),2013 VOL-IV * ISSUE 43-44

अर्थ – गौरवम् नाटक में प्रयुक्त अर्थोपक्षेपकों का संक्षिप्त विवेचन

April-May,2013

* डॉ. प्रोमिला

* संस्कृत विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय ,रोहतक (हरियाणा)

l{kfidk

'अर्थोपक्षेपक' नाट्य का अनिवार्य अंग है। अर्थोपक्षेपक का अर्थ है– उपेक्षित वस्तु को संक्षेप में प्रस्तुत करना। नाट्य कथावस्तु के प्रारम्भ में नाट्य के कुछ महत्वपूर्ण अंश भी होते हैं। जिनको व्यक्त करना आवश्यक होता है। परन्तु जिसे मंच पर मंचित नहीं किया जा सकता अपितु उसकी सूचना मात्र दी जाती है। यह सूचना 'अर्थोपक्षेपकों' के माध्यम से दी जाती है। अर्थोपक्षेपक पाँच प्रकार के होते हैं, यथा– विष्कम्भक, चूलिका, अंङ्कास्य, अंङ्कावतार, प्रवेशक।[1] दशरूपककार ने कहा है कि लम्बी यात्रा, वध, युद्ध, स्नान, अनुलेपन, वस्त्रधारण आदि को प्रत्यक्षरूप में नहीं दिखाना चाहिए। इनकी सूचना मात्र देनी चाहिए।[2] कवि अशोक कुमार डबराल ने 'अर्थ–गौरवम' नाटक में विष्कम्भक तथा प्रवेशक 'अर्थोपक्षेपक' का प्रयोग किया है। जिसका वर्णन प्रस्तुत शोध–पत्र में किया गया है।

संस्कृत–नाट्य के प्रारम्भ में नान्दी तथा प्रस्तावना के पश्चात् नाट्य–कथावस्तु प्रारम्भ होती है। यदि कथावस्तु के आरम्भ में कुछ अप्रयोज्य घटनाएँ नीरस, अनुचित तथा अत्यधिक विस्तृत होती हैं, तब उन अप्रयोज्य घटनाओं का रंगमंच पर प्रदर्शन करना उचित नहीं है।

यदि उन घटनाओं का ज्ञान कथा के लिए आवश्यक है तो नाट्य–वस्तु के आरम्भ में ही ऐसी अप्रयोज्य घटनाओं की मात्र सूचना दे दी जाती है। इसके लिए 'विष्कम्भक' अर्थोपक्षेपक का आश्रय लिया जाता है।

'विष्कम्भक' अर्थोपक्षेपक के माध्यम से अतीत अथवा आने वाली घटनाओं की सूचना संक्षेप में एक मध्यम पात्र अथवा दो मध्यम पात्रों के माध्यम से दी जाती है। इसका लक्षण है–

^^oÙkofr'; ek.kkuk dFkk'kkuk fun'kd% A
l{kikFkLr fo'dEHkk e/; ik=i;kftr%AA**3

यह दो प्रकार का होता है–

(क) शुद्ध (मध्यम पात्र)
(ख) संकीर्ण या मिश्र (अधम पात्र)

'विष्कम्भक' की रचना प्रथम अंक के आदि में की जाती है, अन्त में या मध्य में नहीं। प्रथम अंक के प्रारम्भ में मात्र 'विष्कम्भक' का प्रयोग किया जाता है। यद्यपि दो अंकों के मध्य में अन्य अर्थोपक्षेपकों का भी प्रयोग किया जा सकता है। यह दो अंकों के कथाभाग को जोड़कर कथा को अविच्छिन्न रूप प्रदान करता हैं। विष्कम्भक 'शुद्ध' होता है, एवं नीच तथा मध्यम पात्रों द्वारा प्रयोग किया हुआ विष्कम्भक 'संकीर्ण' होता है।[4]

अशोक कुमार डबराल द्वारा रचित 'अर्थ–गौरवम्' नाटक के अन्तर्गत विष्कम्भक' का प्रयोग हुआ है। जिसमें नटखट तथा चटुल दो बालक कवि सम्मेलन से भारवि की कविता सुनकर घर जाते हैं। वे दोनों मार्ग में परस्पर वार्ता करते हुए कवि भारवि के कवित्व की प्रशंसा करते हैं तथा भारवि का अपने माताा–पिता के साथ सम्बन्ध को लेकर भी चर्चा करते हैं, यथा–

''नटखट : – (गायति)
lglk fon/khr u fØ;ke
vfood % ijekinka ineA

चटुलः – साधु हे भारवे साधु –
o'.kr gh fg foe';dkfj.k
x.kyC/kk % Lo;eo lEin%A

नटखटः– चित्रम्। तथापि जनाः अविचार्य एव कार्यं कुर्वन्ति।

चटुलः– नट! सत्यं, यथा भारवेः पिता श्रीधरः।

नटखटः– भारवे : पिता ?

चटुलः– अथ किम्? श्रूयते यत् भारवेः पिता सदा तस्य निन्दामेव करोति।

नटखटः– निन्दति? किन्तु किमर्थम्? अयं तु सुकविः। सर्वत्र तस्य प्रशंसा भवति।
पुनः पिता श्रीधरः अपि विद्वान्, पूज्यश्च तत्.........।

चटुलः– एतदेव तु दुःखम्। तथापि स तस्मै कुप्यति ईर्ष्यति च। सभामध्ये अपि तं अपमानितं करोति।

नटखटः –कारणम् ?

चटुलः – तत्त तु अहं न जाने। भविष्यति किमपि कारणम् ? (विहस्य) शनिदिवाकरयोरिव भविष्यति।।

नटखटः –निन्दतु नाम। किन्तु अनुचितम् एतद्।

चटुलः – अधुनैव आवां कवि सम्मेलनात् तस्य कवितां श्रुत्वा आगच्छावः।

नटखटः –चटुल न केवलं कवितां अपितु भूरि–भूरि काव्य–प्रशंसामपि वद। भारविः भारवि एव, भारवे : भारवेरिव।

चटुलः– अहो।
Hkkjo% Hkkfr ykd·fLeu
fnokdky fg doyeA
Hkkjo% Hkkjrh Hkkfr
lo=o fnokfu'keAA

नटखटः– चटुल। पश्य पश्य। अयं भारविः मित्रै सह इत एवाभिवर्तते।''[5]

इस प्रकार कवि भारवि के कवित्व की सूचना तथा भारवि के माता–पिता के विषय में सूचित कर 'विष्कम्भक' समाप्त होता है और प्रथम अंक का प्रारम्भ होता है। इसी प्रकार नाट्यकार ने 'अर्थ–गौरवम्' नाटक में 'प्रवेशक' अर्थोपक्षेपक का भी यथोचित प्रयोग किया है। 'प्रवेशक' का शाब्दिक अर्थ है– सामाजिक के हृदय में अप्रत्यक्ष अर्थ का प्रवेश करना। यह भी विष्कम्भक की भाँति ही अतीत एवं भावी घटनाओं का सूचक है।

इसमें अधम श्रेणी के पात्रों का प्रयोग होता है। इसकी भाषा प्राकृत होती है। प्रवेशक का प्रयोग कभी भी नाटक के प्रारम्भ में नहीं होता है। इसकी योजना सदा अंकों के मध्य की जाती है, तथा यह भी शेष अर्थों (कथांशों) का सूचक है।[6] आचार्य भरत के अनुसार दुसरे अंकों में घटित होने वाली घटना का संक्षेप में विवरण प्रस्तुत करने वाले अर्थोपक्षेपक को 'प्रवेशक' कहा जाता है। प्रवेशक का विधान नाटक एवं प्रकरण में ही होना चाहिए।[7]

'अर्थ–गौरवम्' नाटक के सप्तम तथा अष्टम अंक के मध्य 'प्रवेशक' का प्रयोग किया गया है। इसके पात्र शौण्डिकी, मधुकण्ठ एवं मधुघोष, शौण्डिकी की मधुशाला में जाकर शराब पीते है। वे रंगमंच पर पन्द्रह वर्ष के प्रवास के पश्चात् सेठ वर्धमान के स्वदेश लौटने की सूचना देते हैं, यथा–''(सन्ध्याकालः शौण्डिक्याः आपानके मतौ मद्यपौ द्वौ वर्षवरौ मधुकण्ठः मधुघोषश्च)

शौण्डिकीः – (मधुकण्ठस्य कण्ठं गृहीत्वा) रे शौण्ड! गर्दभः इव किं गर्दयसि। तूष्णीं पिब।

मधुकण्ठः – त्वया गर्दभः कथितः। मम गानं गर्दभगानं भणसि। अपसर। त्वां जानामि। मद्यपानां मध्ये तु गर्दभी अपि अप्सारयते।

शौण्डिकीः – रे नपुंसक। किं अहं गर्दभी? (चर्पटं दत्त्वा) अहं का? इति, दर्शयामि त्वाम्। रे मुष्टिक! रे चाणूर!(ततः प्रविशतः दौ मत्तौ, मल्लौ चाणूरमुष्टिकौ)

चाणूरः – किं रे मधुकण्ठ। किं इच्छसि?

मधुकण्ठः – (पानपात्रं प्रदर्श्य) किंचिद् मद्यम्।

(मधुघोषः भीतः शनैः निष्क्रान्तः)

मुष्टिकः –(मुष्टिप्रहारं कृत्वा) मद्यम् !

मधुकण्ठः –न। न। (वाम–कपोले–न्यस्त–हस्तः बहिर्गत्वा) हा हतोऽस्मि।
दास्यापुत्रेण मुष्टिकेन मुष्टिप्रहारः कृतः।

मधुघोषः – मित्र। स्मर तावद्। पंचदशवर्षपूर्वं आस्मिन् एव पानागारे हारिणा तव गीतराणेण मुग्धया अनया एवं चर्पटः दत्तः आसीत् तव कपोले।

मधुकण्ठः –सम्यक् स्मारितः । तद् तु मित्र ! तस्याः प्रेम एव आसीत्।

मधुघोषः – मित्र ! यस्य वर्धमानस्य दानेन तदा आवाभ्याम् अत्र आगत्य पीतं स एवं दानी सार्थः पंचदशवर्षानन्तरं प्रवासात् आयाति अद्य।

मधुकण्ठः – भाग्येन वर्धावहे। तद् श्वः भूते गातुं नर्तितुंच गमिष्यावः। किन्तु पातुं अत्र पुनः न।

मधुघोषः – अहं जानमि। श्वः त्वमेव कथयिष्यसि यत् शौण्डिकीम् उपसर्पावः।

मधुकण्ठः –सत्यं सखे! किं करवाणि। दुर्ललितं मनः तामेव चिन्तयति। ततः चलावः प्रथमं वर्धमानस्य प्रसादं स्वागतमहोत्सवे।'',

इस प्रकार यहाँ पर मधुघोष एवं मधुकण्ठ की परस्पर वार्तालाप से अतीत एवं भावी घटनाओं की सूचना दर्शकों की दी गई है। इसके साथ ही यह भी विदित होता है कि मधुकण्ठ एवं मधुघोष मदपान करने वाले निम्न श्रेणी के पात्र हैं। वे मंच पर दर्शकों को सेठ वर्धमान के आने की सूचना देते हैं तथा मंच से चले जाते हैं।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हैं कि कवि अशोक कुमार डबराल ने 'अर्थ–गौरवम्' नाटक में नाट्यशास्त्रीय परम्परानुसार अर्थोपक्षेपकों का प्रयोग किया है।

संदर्भ ग्रंथ

1. अर्थोपक्षेपकैः सूच्यं पंचभिः प्रतिपादयेत्।
   विष्कम्भकचूलिकाङ्कास्याङ्कावतारप्रवेशकैः।। धन., दश., 1/57, 58 AB
2. दुराध्वानं वधं युद्ध राज्यदेशादिविप्लवम्।
   सरोधं भोजनं स्नानं सुरतं चानुलेपनम्।
   अम्बरग्रहणादीनि प्रत्यक्षाणि न निर्दिशेत्।। धन., दश., 3/34, 35
3. वही; 1/59
4. एकानेककृतः शुद्धः संकीर्णो नीचमध्यमैः। धन., दश., 1/60
5. डबराल डॉ. अशोक कुमार, अर्थ–गौरवम्, विष्कम्भक, पृ. सं.–102,103
6. तद्वदेवानुदात्तोक्त्या नीचपात्रप्रयोजितः।
   प्रवेशोऽङ्कद्वयस्यान्तः शेषार्थस्योपसूचक।। धन., दश. 1/60, 61
7. अंकान्तरानुसारी संक्षेपार्थमधिकष्त्य बिन्दूनाम्।
   प्रकरण नाटकविषये प्रवेशको नाम विज्ञेय।। भ., ना. शा., 19/114
8. डबराल, डॉ., अशोक कुमार, अर्थगौरवम्, प्रवेशक, पृ. सं.–155–159